हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नहीं मूकूं निध परहरी।
नैणे निरखूं निरमल चित करी, हूं रुदे राखीस वालो प्रेम धरी।। २४ ।।

अब मन, वचन और कर्म से अपने अखण्ड घर को नहीं छोड़ूंगी अपने चित्त को निर्मल करके देखूंगी और धनी के प्रेम को हृदय में रखूंगी।

करी परणाम लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।
दंडवत करूं जीव ने मन, दऊं प्रदखिणा रात ने दिन।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर प्रणाम करती हैं और कहती हैं, मैं बड़े लाड व प्यार से आपकी सेवा करूंगी। जीव और मन से दण्डवत् करती हूं और रात-दिन आपकी परिक्रमा करती हूं।

कृपा करो छो सहु साथज तणी, वली कृपा साथने करजो घणी घणी।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार।। २६ ।।

हे धनी! आप सुन्दरसाथ पर बड़ी कृपा करते हो। आगे भी बारबार अति कृपा करना। इन्द्रावती आपके पांव पड़कर कहती है कि जिस प्रकार पति, पत्नी का ध्यान रखता है, आप उसी तरह हमारा ध्यान रखो।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २६३ ॥

हवे आपणमां बेठा आधार, रामत देखाडी उघाडी बार।
हवे माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार।। १ ।।

अब हमारे बीच में धनी विराजमान हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों प्रयत्न करे तो भी धनी हमें नहीं छोड़ेंगे।

तेडी आपणने जाय घरे, वचन कह्या केम पाछां फरे।
मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाय घरे।। २ ।।

धनी हमें घर लेकर ही जाएंगे। जो वचन उन्होंने कहे वह उसे पूरा करेंगे। हमारे मन के मनोरथ को निश्चित रूप से पूरा कर के बुलाकर घर ले जाएंगे।

जो हवे आपण ओलखिए आवार, तो जीव घणूं पामे करार।
साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई आवी छे फरी।। ३ ।।

इस बार यदि हम धनी की पहचान कर लें तो जीव को बड़ा करार होगा (आनन्द होगा)। सुन्दर साथ के ऊपर धनी ने अति कृपा की है। फिर से सब साधन दे दिए हैं।

वली अवसर आव्यो छे घणो, अने वखत उघड्यो साथज तणो।
आपणे नव मूकवा हीडूं संसार, धणी आपणो विछोडो नव सहे लगार।। ४ ।।

फिर से अवसर हाथ आया है और सुन्दरसाथ के नसीब खुल गए हैं। आप संसार को नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा बिछोह नहीं सहन करते, अर्थात् धनी हमें नहीं छोड़ सकते।

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोइए सही।
सुपन विछोडो पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे।। ५ ।।

यदि हम जागृत बुद्धि से देखें तो वियोग नहीं है। स्वप्न के अन्दर ही हम माया देख रहे हैं। तारतम ज्ञान से स्पष्ट जानकारी मिलती है कि सपने में भी धनी हमें छोड़ना सहन नहीं करते।

Nijanand App

लई तारतम अजवालूं सार, वली श्रीजी आव्या आवार।
जाणे रखे केहेने उत्कंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं नव सहे।। ६ ।।

अब फिर से जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर श्रीजी आए हैं। किसी की भी कोई चाहना बाकी रह जाए, धनी इतना भी सहन नहीं करेंगे।

श्री धणीतणा गुण केटला कहूं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहूं।
पण पाधरा गुण दीसे अपार, धणिए जे कीधां आवार।। ७ ।।

धनी के गुणों का कहां तक बयान करूं? मैं नासमझी के कारण अधिक ग्रहण नहीं कर सकती। इस बार जो धनी ने कृपा की है, वह गुण बेशुमार स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

आपणी मीटे दीठां सही, पण आणी जिभ्याए केहेवाय नहीं।
भोम कणका जो गणाए, सायर लेहेरे उठे जल मांहें।। ८ ।।

इस नजर से मैंने देखा तो सही, पर जुबान से कहनी में नहीं आते। पृथ्वी के कण यदि कोई गिन भी ले, सागर की लहरें भी यदि कोई गिन ले (पर धनी के गुण नहीं गिने जा सकते)।

मेघ पण गाजे वली पडे, वनस्पति पत्र कोई नव गणे।
जदिपे तेहेनो निरमाण थाय, पण धणीतणा गुण कोणे न गणाय।। ९ ।।

बादलों की गरज से पड़ी बूंदें भी कोई गिन ले, वृक्षों के पत्ते कोई गिन ले, पृथ्वी के कण यदि कोई गिन ले। यह चारों चीजें गिनी नहीं जा सकती। यदि इनको कोई गिन भी ले, तो भी धनी के गुण तो गिने नहीं जा सकते।

न गणाय आ फेरा तणां, अने गुण आपणसूं कीधां अति घणां।
पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ।। १० ।।

जब इस फेरे (जागनी के ब्रह्माण्ड में) के गुण जो धनी ने असंख्य किए हैं, गिने नहीं जा सकते, तो पहले फेरे की (ब्रज और रास की) बात कैसे करूं जो अपने धनी प्राणनाथ ने किए हैं।

ते आणी जोगबाईए केम गणू आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार।
इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखूं आपोपणूं।। ११ ।।

मैं इस तन और अन्य सभी साधनों से धनी के गुण कैसे गिनूं? परन्तु कुछ तो गिनना ही है। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मैं अपनापन दिखाकर धनी के गुण गिनती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २७४ ॥

श्री धणीजीना गुण

हवे गुणने लखूंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसूं अति घणां।
जोजन पचास कोट पृथ्वी केहेवाए, आडी ऊभी सर्वे ते मांहें।। १ ।।

हे धाम के धनी! मैं आपके गुणों को लिखती हूं जो आपने मेरे साथ बेशुमार किए। पचास करोड़ योजन पृथ्वी कही जाती है। इसमें आड़ी, टेड़ी और खड़ी सब आ गईं।

Nijanand App